No. of printed pages : 7 **MTT-003**

Post Graduate Certificate in Bangla-Hindi Translation Programme

Term-End Examination

December, 2023

MTT-003 : Bangla-Hindi translation in various linguistic areas

Duration : 3 Hours **Maximum Marks : 100**

मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 7 **MTT-003**

बांग्ला–हिन्दी अनुवाद कार्यक्रम में स्नातकोत्तर प्रमाणपत्र

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर –2023

MTT-003: बांग्ला–हिंदी के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद

समय सीमा : 3 घंटे अधिकतम अंक : 100

नोटः 1. सभी प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

2. प्रश्न संख्या 1 का उत्तर लगभग 750 शब्दों में दीजिए।

1. बांग्ला से हिन्दी में साहित्यिक अनुवाद करते समय किन–किन बातों पर ध्यान देना आवश्यक है? सोदाहरण चर्चा कीजिए। 20

अथवा

समाचार का अनुवाद करने में होने वाली कठिनाईयों को रेखांकित कीजिए।

2. निम्नलिखित बांग्ला शब्दों के हिन्दी पर्याय लिखिए: 5

জাতীয়, পৌরসভা, ঘড়োয়া, বন্যা, তাড়ানো, থাওয়া-দাওয়া, দরপত্র, ঝড়, গেঁয়ো, ওষুধপত্র।

3. निम्नलिखित हिन्दी शब्दों के बांग्ला पर्याय लिखिए: 5

आपूर्तिकर्ता, तहस–नहस, लोटपोट, अधिवक्ता, नतीजतन, आमुख, जानबूझ, हकबक, बरगद, हुड़दंग।

4. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच शब्दों के बांग्ला में अर्थ बताइए और उनका हिन्दी और बांग्ला वाक्यों में अलग–अलग प्रयोग कीजिए: 20

अतिरिक्त, घर, स्रोत, सत्कार, अर्थ, संदेश, संघर्ष, चमत्कार, कृति, उद्भट।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं चार के हिन्दी में अनुवाद कीजिए: 4x10=40

(a) আমি এই প্রথম কলিকাতায় আসিলাম। এতবড় জমকাল শহর পূর্ব্বে কখনও দেখি নাই। মনে ভাবিলাম যদি এই প্রকান্ড গঙ্গার উপরে কাঠের সাঁকোর মাঝামাঝি কিংবা ঐ যেখানে একরাশ মাস্তুল থাড়া করিয়া জাহাজগুলো

দাঁড়াইয়া আছে, সেই বরাবর যদি একবার তলিয়ে যাই, তাহা হইলে কখনও বাড়ি ফিরিয়া যাইতে পারিব না।

কলিকাতায় আমার একটুকুও ভাল লাগিল না। এত ভয়ে কি আর ভালোবাসা হয়? কখনও যে হইবে সে ভরসা করিতে পারিলাম না।

কোথায় গেল আমাদের সেই নদীর ধার, সেই বাঁশঝাড়, মাঠের মধ্যে বেলগাছ, মিত্তিরদের বাগানের এককোনের পেঁপে গাছ, কিছুই নাই। শুধু বড় বড় বাড়ি, বড় বড় গাড়িঘোড়া আর লোকজন ঠেসাঠেসি, পেষাপেষি, বড় বড় রাস্তা। এইসব দেখিয়া আমার কান্না আসিল।

(b) নতুন চাকরি নেওয়ার পর একবার পিতামাতার সঙ্গে দেখা করার প্রয়োজন। ঈশ্বরচন্দ্র তাই ভাইদের নিয়ে বেরিয়ে পড়লেন। কলকাতার বাসা থেকে স্বগ্রাম মেদিনীপুরে পৌঁছোবার ব্যবস্থা অতি সরল, গাড়িঘোড়ার কোনো বালাই নেই। বউবাজার থেকে বেরিয়ে পদব্রজে হাটখোলার গঙ্গার ধারে এসে ফেরি নৌকায় পার হয়ে গিয়ে উঠলেন শালিখায়। তারপর বাঁধা রাস্তা ধরে হন্টন। বৈশাখ মাস, যখন তখন ঝড়বৃষ্টির সম্ভাবনা, সেরকম হলে গাছতলায় বিশ্রাম। মসাট গ্রাম পর্যন্ত্য পৌঁছে রাস্তা ছেড়ে সদলবলে নেমে পড়লেন রাস্তার মধ্যে। কোনাকুনি পশ্চিম মুখে গেলে দূরত্ব সংক্ষেপ হয়। বর্ষার সময় রাস্তা ও মাঠ প্রায় একাকার হয়ে যায়। কোথাও কোথাও হাঁটু সমান কাদা ঠেলে এগোতে হয়। এখন অবশ্য মাঠঘাট শুকনো। ওরা দিনশেষে পৌঁছালেন রাজবলহাটে। এখানে

দামোদর নদী পেরুতে হবে। সঙ্গে চিঁড়ে, গুড়, মুড়ি যা ছিল তা দিয়ে আহার সেরে নেওয়া হলো।

দামোদর অতি ভয়ঙ্কর নদী ও অত্যন্ত সুন্দর। এখন গ্রীষ্মকাল। অধিকাংশ নদীনালারই তেজ মরে যায়। কিন্তু দামোদর এই সময়ও তপস্যারত যোগীর মত কৃশকায় হলেও সমান তেজস্বী।

(c) রায়পুরের নতুন স্টেডিয়ামে মাঠভর্তি দর্শক ভীড় জমিয়েছিল একটা ভাল আন্তর্জাতিক একদিনের ম্যাচ দেখার জন্য। কিন্তু সব মিলিয়ে শনিবারের ম্যাচটা হল ৫৫ ওভারের। নিউজিল্যান্ডকে আট উইকেটে উড়িয়ে দিয়ে দ্বিতীয় একদিনের ম্যাচ জিতে নিল ভারত। সঙ্গে ঘরের মাঠে আরও একটা সিরিজ।

এই ম্যাচের শুরুতেই অবশ্য একটা নাটক ছিল। এমন ঘটনা আন্তর্জাতিক ক্রিকেটে তো বটেই, ঘরোয়া ক্রিকেটেও ঘটেছে কিনা মনে করতে পারছি না। টস জেতার পর রোহিতের কাছে যখন জানতে চাওয়া হল কী নেবেন ব্যাটিং না বোলিং তখন ভারত অধিনায়ক চুপ করে রইল। প্রায় ১৫–২০ সেকেন্ড ধরে মনে করার চেষ্টা করল। তারপরে বলতে পারল, বোলিং করব। সিদ্ধান্তে অবশ্য কোন ভুল ছিল না, সেটা ভারতীয় প্রেসাররা বুঝিয়ে দিল প্রথম ১০ ওভারেই। পাঁচ উইকেট হারানোর পরে নিউজিল্যান্ড যে আর ম্যাচে ফিরতে পারবে না সেটা পরিষ্কার হয়ে গিয়েছিল।

(d) যতক্ষণ বাইরে না যাবার ডাক আসে

আমি ঘরে আছি।

বন্দীর মতো, ঘরের সব দরোজা জানালা বন্ধ করে

ওরা আমায় থাকতে বলেছে আজ।

বলেছে আকাশের ডাকে সাড়া দিও না,

বাতাসের দিকে কান ফিরিয়ে রাখো,

তুমি বন্দী, মনে রেখো কথাটা।

কিন্তু কী আশ্চর্য্য, কিছুক্ষণের মধ্যেই

কার করতালির চোটে

আমার ঘুম ভাঙলো।

উঠে দেখলুম, এক আকাশ তারা আমায় দূর থেকে

হাতছানি দিচ্ছে কেবলি।

(e) হিন্দী নাটক বাংলা মঞ্চে সন্মান ও মর্যাদার সাথে গৃহীত হয়েছে। তার পরিমান তুলনামূলকভাবে কম হতে পারে, কিন্তু তার গভীরতা কম নয়। আধুনিকতার প্রথম দিকে হিন্দী বেশী পরিমানে গ্রহণ করেছিল বাংলাকে। কিন্তু সাম্প্রতিক কালে হিন্দী নাট্যশিল্পের বৈভব ও মহিমার প্রতি আকৃষ্ট হয়েছেন বাংলার নাট্যশিল্পীরা এবং অকৃপণ হাতে গ্রহণ করেছেন সেই ঐশ্বর্যকে। যেমন মহান কথা সাহিত্যিক প্রেমচন্দের কতগল্প যে বাংলা নাট্যরূপ পেয়েছে

এবং কত শতবার তাদের অভিনয় হয়েছে তার পরিমাপ করা দুঃসাধ্য।

সাম্প্রতিক সময়ের উল্লেখ্য অনুবাদ রমেশ মেহতার অত্যন্ত জনপ্রিয় নাটক "আন্ডার সেক্রেটারী"। নিবেদিতা দাস "যা নয় তাই" নামে অনুবাদ করেন। কলকাতার শৌভনিক নাট্যসংস্থা এটি ১৯৫৯ সালে মঞ্চস্থ্য করেন।

মোহন রাকেশ রচিত 'আধে অধুরে' বাংলায় অনুবাদ করেন প্রতিভা অগ্রবাল ও শমীক বন্দ্যোপাধ্যায়। বহুরূপী পত্রিকায় নাটকটি প্রকাশিত হয়। শৌভনিক নাট্য সংস্থা নাটকটি মঞ্চস্থ করে।

কিন্তু প্রেমচন্দের গল্পগুলির নাট্যরূপ এবং অভিনয় বাংলা মঞ্চে খুব জনপ্রিয় হয়েছে। তার 'কফন' , 'পুস কী রাত', 'নমক ক দারোগা', 'সদ্গতি' ইত্যাদি খুবই জনপ্রিয় নাট্যরূপ।

6. निम्नलिखित में से किसी एक का बांग्ला में अनुवाद कीजिए: 1x10=10

(a) महिलाओं के अर्थोपार्जन का पहलू उनकी व्यक्तिगत ही नहीं, सामाजिक और पारिवारिक स्थिति पर भी प्रभाव ड़ालता है। इस मोर्चे पर मौजूद भेद कहीं न कहीं स्त्रियों को दोयम दर्जे पर रखने वाला जाल ही है। आज भी असंगठित क्षेत्रों में महिलाओं के श्रम की कीमत कम ही आँकी जा रही है। उन्हें पुरूष श्रमिकों के मुकाबले 30 से 40 प्रतिशत कम मजदूरी मिलती है। मेहनतकश महिलाओं को मिलने वाले पारिश्रमिक का यह अंतर उनकी श्रमशील भूमिका की अनदेखा ही नहीं; गैर बराबरी की बुनियाद भी

है। ईंट भट्टा, पत्थर की खदान, ढुलाई और स्लैब ढलाई जैसे जोखिमपूर्ण काम करने के बावजूद पारिश्रमिक का अंतर होता ही है। लैंगिक असमानता की यह स्थिति महिला श्रमिकों के वर्तमान ही नहीं बल्कि भविष्य को भी प्रभावित करती है।

(b) बसंत ऋतु के आगमन पर सब लोग बसंत पंचमी का त्यौहार मनाकर खुशियाँ मनाते हैं। बसंत के आने पर सर्दियों का अंत होता है और सब जगह खुशहाली छा जाती है। लेकिन इस बार प्रकृति का सर्दी से सीधे बसंत ऋतु को बाइपास कर गर्मी की ओर उद्यत होना गंभीर है।

दिन और रात का तापमान लगातार बढ़ रहा है। दिन का पारा 30 डिग्री सेल्सियस के पार हो गया है, जिससे किसानों की चिंता बढ़ गई है। क्योंकि बढ़ता हुआ तापमान फसलों पर प्रभाव डालेगा। गेहूँ की फसल इस समय फूल की अवस्था पर है। तापमान अधिक होने पर दाना सिकुड़ सकता है, जिससे उसके उत्पादन पर भी असर पड़ेगा। सर्दी अब विदाई की ओर है। पश्चिमी विक्षोभ के चलते पारा लगातार ऊपर की ओर बढ़ रहा है। दिन के समय तेज धूप निकल रही है जो अभी से लोगों का पसीना निकालने लगी है।

हिमाचल के धर्मशाला में भी 52 साल का रिकॉर्ड टूट गया। मौसम का ये अजब–गजब हाल हर दिन देखने को मिल रहा है। आप जानते हैं कि फरवरी का महीना बसंत का होता है। इस बार बंसत बिल्कुल गायब है।